फार्मर फर्स्ट परियोजना के अंतर्गत खरीफ किसान गोष्ठी का आयोजन

केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा फार्मर फर्स्ट परियोजना के अंतर्गत ग्राम कथूरा, सोनीपत में खरीफ किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कुल 70 किसानों ने भाग लिया। गांव में जलभराव वाली लवणीय मिट्टी की समस्या है। डॉ. प्रवेंद्र श्योराण (प्रमुख अन्वेषक) ने फार्मर फर्स्ट परियोजना के उद्देश्यों और गांव में जल भराव वाली लवणीय मिट्टी के

प्रबंधन के लिए निर्धारित गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि क्षेत्र की समस्याओं की पहचान कर वैज्ञानिक और तकनीकी हस्तक्षेप द्वारा प्रभावित क्षेत्रों में कृषि उत्पादकता बेहतर बनाने के प्रयास किए जाएंगे । किसानों को धान की नर्सरी में फुट रोट और बकानी (झंडा रोग) का प्रबंधन करते समय उचित सिफारिशों का पालन करने के लिए भी कहा गया। साथ ही उन्होंने बेहतर आय सृजन के लिए बाजार संचालित कृषि पर ज्ञान हासिल करने भी पर जोर दिया। डॉ. सत्येंद्र कुमार ने बताया कि केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान ने जलभराव वाली लवणीय मिट्टी को पुनः ठीक करने के लिए एक ट्रॉली पर लगा हुआ सौर ऊर्जा संचालित पंपिंग सेट तैयार किया है। इस प्रणाली को खराब उप-सतह जल निकासी स्थलों में जल निकासी के लिए स्थापित किया जाएगा।

पानी निकासी के लिए लगाया जाएगा पंपसेट : डा. श्योराण

प्रमुख अन्वेषक डा. प्रवेंद्र श्योराण (दाएं) कथूरा में किसानों को संबोधित करते ■ जागरण

जासं, गोहाना: केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान द्वारा फार्मर फर्स्ट परियोजना के तहत बृहस्पतिवार को गांव कथूरा में किसान संगोष्ठी आयोजित की गई। किसानों को लवणीय भूमि सुधार के लिए टिप्स दिए गए। मुख्य वक्ता संस्थान के करनाल स्थित कार्यालय के प्रमुख अन्वेषक डा. प्रवेंद्र श्योराण ने कहा कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी हस्तक्षेप द्वारा गांव में लवणीय भूमि में कृषि उत्पादकता बेहतर बनाने के प्रयास किए जाएंगे। लवणीय प्रभावित क्षेत्र में पानी निकासी के लिए पंपसेट लगाया जाएगा।

प्रमुख अन्वेषक डा. प्रवेंद्र श्योराण ने गांव कथूरा में खेतों में जलभराव वाली लवणीय भूमि का निरीक्षण किया। इसके बाद किसान संगोष्ठी में किसानों को लवणीय भूमि प्रबंधन के लिए जानकारी दी। उन्होंने कहा कि केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान द्वारा लवणीय भूमि को दोबारा ठीक करने के लिए एक ट्राली पर लगा हुआ सौर ऊर्जा संचालित पंपिंग सेट तैयार किया गया है।

इस प्रणाली को लवणीय प्रभावित क्षेत्रों में जल निकासी के लिए स्थापित किया जाएगा। उन्होंने किसानों को धान की नर्सरी में फुट रोग और बकानी रोग के प्रबंधन के बारे में जानकारी दी। किसानों में फसलों की बढ़वार के लिए 10 किलो सागरिका और खरपतवार प्रबंधन के लिए शाकनाशी प्रेटीलाक्लोर के बैग वितरित किए गए।

लवणीय भूमि में कृषि उत्पादकता को बेहतर बनाने के टिप्स दिए

■ कथूरा में खरीफ किसान गोष्ठी को डॉ. प्रवेंद्र ने संबोधित किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ गोहाना

गोहाना। डा. प्रवेंद्र श्योराण किसानों को फसल बढ़वार के आवश्यक सामग्री वितरित करते हुए।

केंद्रीय मृदा लवणता अनुसन्धान संस्थान द्वारा फार्मर फर्स्ट परियोजना के तहत बृहस्पतिवार को गांव कथूरा में खरीफ किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में किसानों के साथ लवणीय भूमि सुधार के लिए जरूरी जानकारियां सांझा की गई। मुख्य वक्ता संस्थान से प्रमुख अन्वेषक डा. प्रवेंद्र श्योराण ने कहा कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी हस्तक्षेप द्वारा गांव में लवणीय भूमि में कृषि उत्पादकता बेहतर बनाने के प्रयास किए जाएंगे। प्रमुख अन्वेषक डा. प्रवेंद्र श्योराण ने गांव कथूरा में खेतों में जलभराव वाली लवणीय भूमि का निरीक्षण किया। इसके बाद किसान गोष्ठी में किसानों को लवणीय भूमि प्रबंधन के लिए निर्धारित गतिविधियों बारे जानकारी दी। लवणीय भूमि को पुनः ठीक करने के लिए एक ट्राली पर लगा हुआ सौर ऊर्जा संचालित पंपिंग सेट तैयार किया गया है।

कार्यक्रम में भाग लेने वाले किसानों को बेहतर फसल बढ़वार के लिए 10 किलो सागरिका और खरपतवार प्रबंधन के लिए शाकनाशी

प्रेटीलाक्लोर (रिफिट प्लस) भी वितरित किए गए। बाद में वैज्ञानिक दल ने किसानों के खेतों का दौरा किया और संबंधित किसानों के साथ जरूरत आधारित सलाह साझा की।

फार्मर फर्स्ट परियोजना के अंतर्गत जिप्सम और प्रेसमड का वितरण

भाकृअनुप-केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल ने कैथल जिले के कठवाड़, ग्योंग, मुंदड़ी और सांपली खेड़ी गांवों में चल रहे फार्मर फर्स्ट परियोजना के तहत कृषि सामग्री वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इन गांवों के पानी में अवशिष्ट सोडियम कार्बोनेट जल एवम मृदा लवणता की समस्या है। इस मिट्टी को सुधारने और कृषि उत्पादकता और लाभप्रदता बढ़ाने के लिए 80 किसानों को लगभग 800 बैग जिप्सम और 150 टन प्रेसमड वितरित किए गए। फार्मर फर्स्ट परियोजना के प्रमुख अन्वेषक डॉ. परवेंद्र श्योराण ने किसानों के साथ धान की पनीरी तैयार करने और बीमारियों तथा कीट प्रबंधन के बारे में चर्चा की। साथ ही किसानों को बेहतर आय के लिए बाजार संचालित कृषि पर ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी कहा गया। इसके साथ साथ किसानों को कोरोना की परिस्थितियों के चलते उचित सावधानियां बरतने एवं मास्क लगाने की हिदायत दी गयी।